ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय में श्री जी के विगृह का चित्रण में पहनावा एवं आभरण का रूपांकनः एक अध्ययन

The Design and Appearance Of Gratitude In The Portrayal Of Shree Ji's House In The Purported Vallabh Sect: A Study

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 26/09/2020, Date of Publication: 27/09/2020

ममता शर्मा
शोध छात्रा
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग
एस. के.एस.जी.एम स्कूल,
भानपुरा, मध्य प्रदेश, भारत

शालिनी भारती
विभागाध्यक्षा एसोसिएट प्रोफेसर,
ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग
राजकीय कॉलेज, कोटा
राजस्थान, भारत

सारांश

पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय में श्री जी के विगृह का चित्रण में पहनावा एवं आभरण का रूपांकन एक अध्ययन को ध्यान में रखकर शोध को प्रस्तुत करने का प्रयास शोध की महत्ता को दृष्टी गोचर करते हुए इस मार्ग को अधिक से अधिक लोगों तक प्रचार–प्रसार करने का मेरा शोध कार्य है, शैक्षणिक पृष्टभूमि पर किस–किस प्रकार से अध्ययन किया जा सकता है वर्तमान में उनकी सेवा प्रणाली में कौन–कौन से नित नए अनुकरणों द्वारा अधिक से अधिक वैष्णव सम्प्रदाय को पृष्टि सेवा के आधार पर आधारित किया गया है । द्यसामाजिक, धार्मिक व भावनात्मक सेवा स्वरुप की विशेषताओं के आधार पर प्रमुख रूप से सभी जन मानस को आत्मारूपी स्वरुप द्वारा श्री ठाकुर जी की सेवा भाव को ब्रह्मास्वःप चित्रण में पहनावा एवं आभरण को जागृत करना ही मेरे शोध का प्रस्तुति करण है ।

The design of the dress and obeisance in the depiction of Shree Ji's house in the purported Vallabh sect is an attempt to present the research in the context of a study and my efforts to spread this path to as many people as possible, reflecting the importance of research There is research work, how can one be studied on the academic background, what are the many new imitations present in their service system, based on the background service to more and more Vaishnava sect. Based on the characteristics of social, religious and emotional service, it is important to present my research by awakening the attire and gratitude of Shri Thakur Ji's service spirit in the Brahma Swasp depiction by the self-righteous form to all the public mind.

मुख्य शब्द : पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय।
Sacramentalism.

प्रस्तावना

आज से 500 वर्ष पूर्व पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय का उद्‌गम हुआ था। श्री आचार्य श्री महा प्रभुजी ने जनमानस तक इस धर्म को अपनी भगवदीय वाणी से पूर्व ब्रह्मा.ड पर श्री ठाकुर जी की पताका द्वा लहराया गया था, पुष्टिमार्ग को बढाने में श्री गुंसाई बालको का अत्यधिक महत्व है द्य पुष्टिमार्ग बिना गुरु दीक्षा के श्री ठाकुर जी का सेवा भाव नहीं है द्य वर्तमान में इसका प्रचलन किस प्रकार है यह हमें ग्रंथो व दर्शनों द्वारा ज्ञात होता है । यह मैं सभी जन–समुदाय को अवगत कराने का प्रयास करुँगी ।

पुष्टिमार्ग का सामान्य परिचय

पुष्टिमार्ग का अर्थ है अनुग्रह, कृपा, अतः पुष्टिमार्ग कहें अथवा अनुग्रह मार्ग कहें या कृपा मार्ग कहे, एक ही बात है। श्री वल्लभाचार्य जी ने श्रीमदभागवत के आधार पर 'पुष्टि' शब्द प्रयुक्त किया है श्री वल्लभाचार्य जी ने पुष्टिमार्ग (कृपा मार्ग) को दैवी जीवो के उद्धार के लिए समाज के सामने रखा, वह उनकी निजी कल्पना नहीं, अपितु प्राचीन भारत के अपौरूशेय सर्वश्रद्धास्पद ग्रन्थ साक्षात् भगवत् वाणी वेद, गीता और इसी प्रकार श्री वेद व्यास जी ऋषिप्रवर द्वारा रचित 'ब्रह्मासूत्र' और श्रीमद्‌भागवत् जो की स्वयं भगवान श्रीकृष्ण का वाडमय स्वरूप है,

इन चतुष्टय प्रमाण ग्रंथो पर अकाट्य रूप से आधारित षड़बुद्ध है द्य सब शास्त्रों का नवजीत अर्थात मन्था हुआ सार है। 'पोषण' से ही पुष्टि शब्द बना है। इस प्रकार से निराकार जीव जगत एवं ब्रह्मा से साक्षात्कार निरपेक्ष भाव से ठाकुर जी की सेवा करना ब्रह्मा की शरण में आना पुष्टिमार्ग का सिद्धांत है।

भूमिका

शोध की भूमिका में पृष्टिमार्गीय सेवा को प्रयोगाताम्क तथा रूप –रेखा के अनुसार चित्रकला में ईश्वरीय सृष्टि की अनुपम छटा को बिखेरने वाली अभिव्यक्ति है ।

वाक्यांश

पुष्टि वल्लभ सम्प्रदाय के शोध के अध्ययन में निष्कर्ष स्वरुप सामाजिक, धार्मिक व भावनात्मक सेवा स्वरूप को अनुसंधान विधि एवं प्रारूप सभी जन मानस तक सेवा भाव के रूप में बताने का पूर्ण प्रयास शोध की महत्ता है मैं शोध के माध्यम से श्रीजी के पहनावे पर वर्गीकरण (ऋतु अनुसार) 1. रूपाकृति सज्जा (15 दिन का पखवाड़ा) 2.आवरण प्रणालिया 3. अष्ट सखा का कीर्तन 4. नित्य सेवा प्रकार 5. सचित्र श्रंगारिक पहनावे की योजना श्री जी की स्वरुपता एवं प्रतिकर्ता पृष्ठ भूमि पर सामाजिक आलोकिक मनोरथो द्वारा विभिन्न चित्रणों के

माध्यम से वर्तमान समय में बताने का पुनः प्रयास में अपने शोध के माध्यम से जागृत करुँगी ।

भारतीय संस्कृति में पुष्टियमार्गीय परम्परा एक ऐसी दशा में नैराश्य निमग्न जनो की भक्त की रस सरिता से अवगाहन कराकर उन्हें श्री जी भक्ति में सौन्दर्य व श्रंगार के व्दारा आधुनिक वातावरण में समकालीन सिद्ध हो रहा है।

अनुसंधान विधि एवं प्रारूप

प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकृति की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति होती है । प्रकृति के अनुसंधान की कई विधियाँ है जैसे ऐतिहासिक अनुसंधान वर्णात्मक , प्रयोगात्मक आदि । में अपने शोध के कार्य को ध्यान में रखकर शोध विषय के क्षैत्र से सबंधित जन से तथा मंदिरों से जानकारी व संग्रहालय के ग्रन्थो व सक्षात्कार विधि वाक्यांश :– पुष्टि वल्लभ सम्प्रदाय के शोध के अध्ययन में निष्कर्ष स्वरुप सामाजिक, धार्मिक व भावनात्मक सेवा स्वरूप को अनुसंधान विधि एवं प्रारूप सभी जन मानस तक सेवा भाव के रूप में बताने का पूर्ण प्रयास शोध की महत्ता है मैं शोध के माध्यम से श्रीजी के पहनावे पर वर्गीकरण (ऋतु अनुसार) 1. रूपाकृति सज्जा (15 दिन का पखवाड़ा) 2.आवरण प्रणालिया 3. अष्ट सखा का कीर्तन 4. नित्य सेवा प्रकार 5. सचित्र श्रंगारिक पहनावे की योजना श्री जी की स्वरुपता एवं प्रतिकर्ता पृष्ठ भूमि पर सामाजिक परिवेश पर पड़ने वाला प्रभाव कलात्मक तत्वों के अनुसार गूढ़ रहस्यमय आलोकिक मनोरथो व्दारा विभिन्न चित्रणों के माध्यम से वर्तमान समय में बताने का पुनः प्रयास में अपने शोध के माध्यम से जागृत करुँगी।

भारतीय संस्कृति में पुष्टियमार्गीय परम्परा एक ऐसी दशा में नैराश्य निमग्न जनो की भक्त की रस सरिता से अवगाहन कराकर उन्हें श्री जी भक्ति में सौन्दर्य व श्रंगार के व्दारा आधुनिक वातावरण में समकालीन सिद्ध हो रहा है व्दारा कार्य करुँगी तथा में अपने शोध कार्य को पूर्ण करने में मुख्य रूप से चित्रांकन रूपांकन व लेखन कार्य के व्दारा अनुसंधान विधि का ही प्रयोग करुँगी ।

शोध का उदेश्य

ललित कला ऐसी कला है जिसकी चित्ररंजकता व रूपांकित अध्ययन कला की भौतिक एवं प्रतिष्ठा और सौन्दर्य व्दारा आत्म केन्द्रित होकर सुख का अनुभव कराता है । चित्र कला सौन्दर्य सृष्टि की अनोखी कला है जो सम्पूर्ण सृष्टि का आवरण रूपांकित करती है । में समाज व पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय से जुड़े सभी वैष्णव जन तथा जन रूचि को ध्यान में रखकर अपना शोध कार्य आरम्भ करुँगी द्य मेरा प्रथम ध्येय यही है की में भावी पीढ़ी को यह स्पष्ट कर सकू की वल्लभ सम्प्रदाय में समाज व जन–जन तक श्री ठाकुर सेवा प्रणाली को घर–घर में विराजमान करके धार्मिक भाव को सेवा भाव व्दारा चित्रांकन के माध्यम से सभी तक सोंदर्य अलंकरण की उपत्ति व विकास सुशोभित कर के कई अज्ञान जन समुदाय को सत्यापित करना ही मेरा उदेश्य है ।

शोध का महत्व

अज्ञात तथ्यों को ज्ञात करना ही शोध है। प्रत्येक क्षेत्र के समान चित्र कला में शोध का उतना ही महत्व है

द्य चित्रकला में हर दिन नित नए प्रयोगों }ारा जनरुचि के अनुसार नए आयामों में परिवर्तित किया जा रहा है द्य जैसे व्यापक व लोकप्रिय विषय में भी शोध की महत्ता दृ ष्टी गोचर होती है पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय में श्री वल्लभाचार्य जी में परिस्थितियों में रहकर भी इस मार्ग को लोकप्रियता को अत्यधिक जागृत किया है तथा अधिक से अधिक जन समूह तक ठाकुर जी की सेवा निधि को वर्तमान में सभी वैष्णव जन को सेवा प्रदान की तथा किस–किस भावी कलाकारो द्वारा श्री ठाकुर जी का रूपांकन, चित्रांकन, शेक्षणिक पृष्ठ भूमि पर अध्ययन किया है तथा वर्तमान में उनकी सेवा प्रणाली में कौन–कौन से सेवार्थी द्वारा अनुकरण किया जा रहा है तथा वैष्णव जन समुदाय तक पहुचाने में कितने सक्षम रहे, यह खोजना ही मेरे शोध की महत्ता है ।

उपलब्ध साहित्य की पूर्व समीक्षा

पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय में वर्तमान में जो उपलब्ध साहित्य है, उनमे इतना सार व आलौकिकता को अभूत पूर्व लोकप्रियता हासिल हुई है द्य

वर्तमान में इस सम्प्रदाय का आयाम अत्यधिक सौन्दर्यमय और भाव प्रधानता वाला है तथा दैवी जीवों के उद्धार के लिए इसका उद्‌गम श्री वल्लभाचार्य जी ने विभिन्न परिस्थितियो में किस प्रकार जन मानस तक अवतरित किया है, यह महत्वपूर्ण बताया है ।

निष्कर्ष

पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय के इस शोध में अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप यह स्वीकार जा रहा है, वल्लभ सम्प्रदाय जीव, जगत, ब्रह्मा की उपलब्धि है जिसमें धार्मिक व सांस्कृतिक दोनों का रूप सौन्दर्य व लावण्य और आलौकिकता भावनात्मकता तथा ब्रह्मा सभी एक साथ एक जगह पर विराजमान है द्य इस शोध के अध्ययन में यह महत्वपूर्ण बात है की इस सामाजिक धार्मिक व भावनात्मक सेवा स्वरूप की खूबियाँ और विशेषताएँ रही है, जो की उसी आधार पर प्रमुख रूप से सभी वैष्णवजन की आत्मा में सेवा भाव से विराजमान है ।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *"सर्वश्रृद्धास्पद ग्रन्थ " – श्री वेद व्यास जी द्वारा कृ त*
2. *"वल्लभाख्यान" – गोपाल दास कृत*
3. *ब्रह्मासुत्र और श्रीमद्‌भागवत्" – श्री वेदव्यास जी द्वारा कृत*
4. *"आभुशण प्रणालिका "– गो. श्री षरद बावा श्री महाप्रभुजी का मंदीर कोटा (राज.)*
5. *"गर्ग सरिता" संग्रहालय महाप्रभुजी का मंदीर कोटा (राज.)*